भारतीय इतिहास-लेखन की प्रमुख विचारधाराएँ

डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत
सहायक आचार्य - इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

भारत में नवीन सरकार के साथ मानव संसाधान मंत्री के पदभार संभालते ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन के लिए किसी विद्वान् के नेतृत्व में समिति का गठन किया जाना एक परम्परा सी बन गयी है। उसके साथ इतिहास लेखन पर बहस शुरू हो जाती है, ऐसा अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन सरकार के मानव संसाधन मंत्री मुरलीमनोहर जोशी एवं मनमोहन सिंह की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंह ने एनसीईआरटी की इतिहास विषयक पाठ्यपुस्तकों में व्यापक फेरबदल किया था। ऐसा हम राज्य सरकारों में भी देख सकते हैं, जिसमें इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन को लेकर विवाद हुआ तथा एक दूसरे पर राजनैतिक दलों ने इतिहास के भगवाकरण (दक्षिणपंथीकरण) और वामपंथीकरण करने का आरोप लगाया।

वास्तव में जब भी भारतीय लोकतांत्रिक राज्यव्यवस्था में सत्ता परिवर्तन होता है, तो उसमें शिक्षा के पाठ्यक्रमों में बदलाव अपरिहार्य रूप से जुड़ गया है, जो चिन्ता का विषय एवं विचारणीय मुद्दा है। वस्तुतः यह विवाद नवीन शिक्षण अवधारणाओं, पाठ्य पुस्तकों, शिक्षा में सुधार को लेकर भी होता है, परन्तु विशेषतः इतिहास की अवधारणाओं के लेखन से सम्बन्धित अधिक होता है तथा वह समाज एवं देश में चर्चा का विषय बन जाता है।

यह संपूर्ण विचार इतिहास के पुनर्लेखन से जुड़ा मुद्दा है। इसको लेकर संसद, शिक्षा की विचार गोष्ठियों, प्रतिनिधिमंडलों, कार्यशालाओं आदि में विद्वज्जनों की बहस होती रही है अब यह प्रश्न उठता है कि क्या इतिहास लेखन की पुन:रचना करनी चाहिए अथवा नहीं। उससे पूर्व हमें इस मुद्दे को लेकर इतिहास के सिद्धान्त एवं पद्धतियों के संदर्भ में भी अध्ययन करना चाहिए।

इतिहास लेखन की परपंरा:-

भारत में इतिहास लेखन की परम्परा अति प्राचीन है। साहित्यिक निधि में पुराण साहित्य ऐतिहासिक लेखन के

परिचायक हैं तथा 11वीं शताब्दी में तुर्की आक्रमणकारी महमूद गजनवी के साथ आये ख्वारिज्म के यात्री अलबरूनी ने भारत में इतिहासलेखन की धारणा के अभाव की बात की तथा भारतीय इतिहासलेखन की आलोचना की थी। कालान्तर में साम्राज्यवादी आंग्लवादी विचारक मैकाले ने भी भारतीय इतिहासलेखन का उपहास उड़ाया। उन सभी का यह एक पूर्वाग्रहयुक्त मत था।

इतिहासलेखन की परम्परा एवं धारणा की शुरूआत का श्रेय यूनानी विद्वान इतिहासकार हेरोडोटस को दिया जाता है, जिसे इतिहास का पिता कहते हैं। उनकी इस परंपरा को शुद्धता एवं वैज्ञानिकता थ्यूसिडाइडीज ने प्रदान की किन्तु इन यूनानी इतिहासकारों की धारणा अनैतिहासिक थी, जिससे इतिहास की कोई सार्थकता सिद्ध नहीं होती। यह आरोप सामान्यतया लगता रहता है। इससे हीगल एवं कार्ल मार्क्स के इतिहासलेखन ने मुक्ति पायी। उन्होंने इतिहास को उपदेषात्मक, उद्देश्यमूलक एवं लक्ष्यों के अनुरूप चलने वाला बताया।

हेरोडोटस एवं थ्यूसिडाइडीज इतिहासकारों का एक महत्त्वपूर्ण दोष उनके पास इतिहासलेखन की सामग्री का अभाव होना था, जो केवल जीवनवृत्तों तथा अनुश्रुतियों तक ही सीमित थी, किन्तु 19वीं शताब्दी के जर्मन इतिहासकार लियापोल्उ वान रांके ने इतिहासलेखन में स्रोत की प्रमाणिकता पर बल देते हुए अभिलेखागार में उपलब्ध मौलिक दस्तावेजों में प्राप्त इतिहास को वैसे का वैसा प्रस्तुत करने पर बल दिया, जिससे कालान्तर में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्रांति के प्रणेता ब्रिटेन के केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रत्यक्षवादी भाववादी इतिहासकार लार्ड एक्टन ने पूर्णरूपेण अपनाया।

भाववादी इतिहासकार लार्ड एक्टन ने अन्ततः इतिहासलेखन की एक अभिनव प्रवृत्ति का प्रतिपादन किया जो इतिहास में विवाद एवं कटुता को समाप्त करने वाली प्रगतिवादी विचारधारा से युक्त थी। उन्होंने प्रगतिशील विश्व का एक इतिहास लिखने की चेष्टा की तथा बताया कि वह अंतिम तथ्यात्मक सामग्री से युक्त वस्तुनिष्ठ इतिहास होगा। इसकी पुष्टि लार्ड एक्टन ने अपने ग्रंथ में की है। उन्होंने दि कैम्ब्रिज मॉडर्न हिस्ट्री के संपादन में सहयोगी लेखकों को वस्तुनिष्ठ इतिहास लिखने की हिदायत दी थी। उन्होंने लिखा है कि मारा वाटरलू ऐसा होगा जो फ्रांसीसी, अंग्रेज, जर्मन, डेनमार्कवासी सभी को संतुष्ट करे। लेखकों की सूची देखे बिना कोई यह नहीं बता सके कि ऑक्सफोर्ड के विशप ने कहाँ कलम रोकी उसके बाद कैयरबर्न, गास्केट, लीबरमान और हैरिसन ने कब उठाई।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि इन इतिहासकारों ने इतिहास को वस्तुनिष्ठ एवं अंतिम माना, जिसमें इतिहासकार की भूमिका केवल तथ्यों को संग्रहित कर व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने तक सीमित रखी, जिससे इतिहास पर तकनीकी एवं वैज्ञानिकता का प्रभाव बढ़ने लगा।

20वीं शताब्दी के आदर्शवादी इतिहासकारों ने इतिहास को विज्ञान बनाने की चेष्टा की आलोचना की तथा इतिहास की स्वायत्तता पर बल दिया। विद्वान क्रोचे ने तो इतिहासकार को समसामयिक की संज्ञा दी। इतिहास की इस विचारधार में क्रोचे, लुग्विड एवं ऑकशाट आदि का योगदान रहा। इन्होंने इतिहास को अतीत एवं वर्तमान का सेतु बताया। अतीत सदैव वर्तमान से जुड़ा रहता है, जिससे अंतिम इतिहासलेखन का विचार पूर्णतया बकवास एवं बेतुका है, क्योंकि इतिहासकार वर्तमानकालीन जीवन की समस्याओं एवं अभिरुचियों के आधार पर अतीत का अनुसंधान करने हेतु प्रेरित होता है तथा अतीत के तथ्यों की वर्तमान के अनुसार व्याख्या करता है इस तरह तथ्य एवं व्याख्या से मिल कर इतिहास की रचना होती है। आदर्शवादी इतिहासकारों की विचारधारा ने इतिहास की स्वायत्तता, ऐतिहासिक बौद्धिक ज्ञान एवं इतिहासकार की भूमिका पर बल दिया था।

इतिहास पुनर्लेखन के आधार

भाववादी इतिहासकारों ने अंतिम इतिहास लेखन की बात की थी किन्तु आदर्षवादी इतिहासकारो ने इसे पूर्णतया नकार दिया जो वास्तव में सत्य भी था। इतिहास एक अखंड प्रवाह है यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें परिवर्तन के बावजूद निरंतर बनी रहती है। अतः इतिहास लेखन की पुनर्रचना के निम्न आधार है।

इतिहास अतीत एवं वर्तमान का अन्त: संबंध है, जिसमें वर्तमान समय की समस्याओं एवं अभिरुचियों के आधार पर ही इतिहासकार अतीत के तथ्यों का चुनाव करता है, उन तथ्यों की वर्तमान समाजसम्मत व्याख्या करता है।

इतिहास में शोधों से नवीन तथ्यों तथा खोजों के आधार पर पुनर्रचना होती है ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिससे पुनर्रचना सार्थक सिद्ध हुई है। इतिहासकार ने अपने शोधग्रंथ ''शेरशाह हिज टाइम्स'' में शेरशाह को एक प्रशासक के रूप में बताया, जिसका आधार अब्बास खॉ शेरवानी कृत तारीख-ए-शेरशाही रचना थी। प्राचीन काल में मौर्य साम्राज्य के प्रशासनिक चिंतक कौटिल्य के अर्थशास्त्र को शामशास्त्री ने खोजा। जिससे प्रशासनिक सिद्धान्तों का प्रथम बार ऐसा परिचय मिला। अलीगढ़ के प्रो. अजहर अली ने अपने शोधग्रंथ गल नोबिलिटी अंडर औरंगजेब में औरंगजेब की राजपूतनीति एवं दक्षिण नीति के संदर्भ में परंपरावादी धारणा का खंडन कर नवीन मत दिये जो उल्लेखनीय हैं।

इतिहास में नवीन अध्ययन पद्धतियों ने पुनर्रचना पर बल दिया है। सबअल्टर्न, (उपाश्रयी) एनाल्स स्कूल (सम्पूर्ण और समग्र इतिहास) जैसी विचारधाराओं ने इतिहास क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किया है सब अल्टर्न विचारधारा ने निम्न वर्ग, दलित वर्ग एवं उपेक्षित वर्ग के इतिहास पर प्रकाश डाला, वहीं एनाल्स स्कूल विचारधारा ने मानवीय समाज के अनछुए पहलुओं पर प्रकाष डालने का प्रयास किया, जिसमें पागलों का इतिहास, सपनों का इतिहास एवं खान-पान का

इतिहास जैसे विषय प्रमुख हैं। मानव के चेतन एवं अवचेतन अवस्थाओं के भेद को भी तोड़ा है।

भारतीय इतिहासलेखन की प्रमुख विचारधाराएँः-

साम्राज्यवादी इतिहासकार

प्लासी की लड़ाई 1757ई. को हिन्दुस्तान के इतिहास में ही नहीं, बल्कि इसे इतिहासलेखन में भी एक महत्त्वपूर्ण विभाजक रेखा के रूप में देखा जा सकता है। भारत में अंग्रजी शासन की नींव पड़ी और ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों को प्रशासनिक सुविधा एवं प्रचार के लिए ऐतिहासिक ग्रंथों की आवश्यकता महसूस हुई। इसी क्रम में प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास लिखा गया, जिसका उद्देश्य औपनेवेशिक हित की पूर्ति करना था।

साम्राज्यवादी इतिहासलेखन विचारधारा के अनुयायी इंग्लैण्ड के प्रमुख बुद्धिजीवी एवं विचारक विशेषत: ज्ञानोदय, उपयोगितावाद और रोमांसवाद से प्रेरित थे। साम्राज्यवादी इतिहासकार जिन्होंने भारतीय इतिहास का लेखन किया उनमें वी.ए. स्मिथ, जेम्स मिल, इलियड एण्ड डॉहडसन, लेनपूल डब्ल्यू. एच. मौरलैण्ड, एलफिन्सटन, टामॅस मुनरो, मैकाले, मालसेन एवं विलियम हंटर आदि प्रमुख हैंः-

19वीं शताब्दी के अंत में साम्राज्यवादी इतिहासलेखन का वास्तविक स्वरूप अधिक स्पष्टता से हमारे सामने उभर कर आता है। इसमें निम्नलिखित प्रवृतियाँ एवं विशेषताएँ द्रष्टव्य हैं।

- इतिहासलेखन का मूल औचित्य ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी शासन की महत्ता का प्रतिपादन करना ।
- भारत को एक राष्ट्र होने के बजाय मात्र अलग-थलग जातियों, धर्मों और कबीलों का देश बताना ।
- रामशरण शर्मा के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास की जो व्याख्या की है, उसका लक्ष्य था भारत के चरित्र और उपलब्धियों को नीचा दिखाना और विदेशी शासन को न्यायोचित ठहराना।
- भारतीय इतिहास लेखन में साम्प्रदायिकता का जहर घोलना । इस श्रेणी में जेम्स मिल, हंटन के क्रमषः हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिष इंडिया तथा इंडियान मुस्लिमस् प्रमुख ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। 1857 की क्रांति के बाद यह संक्रामक रोग के रूप में उभरा।

जेम्स मिल ने तो भारतीय इतिहास के प्राचीन एवं मध्यकाल को हिंदू एवं मुस्लिम काल में धार्मिक आधार पर बाँटा, जो पूर्णतया अनुचित था।

राष्ट्रवादी इतिहासकार

भारत के विद्वानों के सामने पश्चिम की चुनौती सामने आयी। वे एक ओर उपनिवेशवादी विचाराधारा के द्वारा इतिहास को तोड़-मरोड कर भारत की अतीत की छवि धूमिल किए जाने से चिढ़े हुए थे। उनका कहना था कि भारत के इतिहास का पुनर्निर्माण किया जाये कि जिससे समाज सुधारने में सहायता मिले।

राष्ट्रवादी इतिहासकारों में राजेन्द्र लाल मित्र, आर.जी. भंडारकर, हेमचन्द्र राय चैधरी, आर.सी. मजूमदार, नीलकंठ शास्त्री, के.पी. जयसवाल, ए.एस. अल्तेकर, सर जदुनाथ सरकार, जी. एस. सरदेसाई, ईश्वरी प्रसाद, ए.एल. श्रीवास्तव, आर.पी. त्रिपाठी, के.एस.लाल, सुंदरलाल आदि प्रमुख हैं।

राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने साम्राज्य वादी इतिहासकारों द्वारा फैलाई धुंध को साफ किया तथा शरतीय दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास लिखा। उन्होंने राष्ट्रीय गौरव एवं अस्मिता पर बल दिया जिससे गौरवपूर्ण इतिहास लिखा गया ताकि राष्ट्रवाद की भावना जाग्रत हो। यह विचारधारा दक्षिण पंथी विचारधारा सिद्ध हुई। इस पर भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण को हिंदू पुनर्जागरण का प्रतीक मान लेने का आरोप लगाया जाता है। इस दृष्टिकोण के कारण इसे भगवाकरण भी कह देते हैं।

मार्क्सवादी इतिहासकार

इतिहासलेखन की मार्क्सवादी विचारधारा कार्लमार्क्स की इतिहास की आर्थिक व्याख्या पर आधारित है जिसमें इतिहास के विकास के उत्पादन साधनों एवं वर्गों को अन्तस्सबंध से जोड़ा गया है जिनमें निश्चित तौर पर आदिम समाजवाद, दासता, सांमतवाद, पूंजीवाद एवं साम्यवाद अवस्थाओं का क्रमिक विकास देखा जा सकता है।

भारत में मार्क्सवादी इतिहासकारों का बींसवी शताब्दी के साठ-सत्तर के दशक में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद पर वर्चस्व रहा। इन्होंने इतिहास की पुनर्रचना प्रारम्भ की जिनमें डी.डी. कौसाम्बी, डी.आर. चानना, आर.एस. शर्मा, रोमिला थापर, इरफान हबीब, सुमित सरकार, विपिन चन्द्र, हरबंस मुखिया, सतीश चन्द्र, दिलबाग सिंह और मुजफ्फर आलम प्रमुख हैं।

- इन इतिहासकारों ने राष्ट्रवादियों की प्रचलित धारणाओं को खंडित करते हुए आर्थिक इतिहास लेखन किया तथा कुपाणकाल को आर्थिक स्वर्णकाल बताया। इससे भारतीय इतिहास के आर्थिक क्षेत्र में शोध हो सका।
- इन्होंने साम्प्रदायिक इतिहास लेखन की आलोचना की तथा भारतीय समाजविखंडन एवं बुराईयों को पूर्णरूपेण

उजागर किया।

इतिहास की मार्क्सवादी विचारधारा में मार्क्सवाद एक आदर्श दर्शन एवं राजव्यवस्था निहित थी। सोवियत संघ एक आदर्श राज्य था तथा सोवियत संघ के विघटन से मार्क्सवादी इतिहासकार चमक-दमक खो बैठे, फिर भी यह एक महत्वपूर्ण विचारधारा रही, जिसने आर्थिक इतिहास में महती भूमिका निभाई और उसे निरन्तर आगे बढ़ाया।

सबॉल्टर्न (उपाश्रयी) विचारधारा

इतिहास की परम्परागत लेखन विषयक अवधारणा के विरोध में सबअल्टर्न विचारधारा ने इतिहास को व्यापक आयाम एवं क्षेत्र प्रदान किया। यह मार्क्सवाद की कमियों के सामने रूप में आयी। आधुनिक भारतीय इतिहास का लेखन में इस विचारधारा लेखन कार्य हो रहा है। मूलतः इस विचारधारा का प्रतिपादन प्रो. रणजीत गुहा ने किया उन्होंने कहा कि भारतीय समाज में दलितों को स्थान दिया जाये, यह दलितों के अध्ययन के नाम से भी जाना जाता है। आधुनिक भारत के इतिहास में दलितों के अध्ययन को यूरोप की तरह आम आदमी का इतिहास या निम्न वर्गों का इतिहास भी कहा जा सकता है। इस पद्धति के आधार पर रणजीत गुहा के साथ सुमित सरकार एवं एरिक स्टोक्स आदि ने भी इतिहास लेखन किया है।

प्रगतिवादी इतिहासकार

स्वंतत्रता-संघर्ष के दौरान राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने साम्राज्यवादी इतिहासकारों के प्रत्युत्तर में सांस्कृतिक गौरवपूर्ण इतिहास लेखन का कार्य प्रारम्भ किया। इन्होंने हिंदू संस्कृति को भारतीय संस्कृति मानते हुए मध्यकालीन शासकों की धार्मिक नीति एवं कार्यों के आधार पर भारतीय संस्कृति के ह्रास पर प्रकाश डाला। मध्यकालीन सुल्तान एवं मुगल बादशाहों की जबरदस्त आलोचना की। प्रत्युत्तर में अलीगढ़ विष्वविद्यालय में मध्यकालीन भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन प्रारम्भ हुआ। उनका कहना था कि मुस्लिम शासकों के द्वारा किये अच्छे कार्यों को श्रेय नहीं मिला। गहन शोध के अभाव से निर्मित परंपरागत धारणाओं को बदलने के रूप में ये प्रगतिवादी इतिहासकार आगे आए।

प्रगतिवादी इतिहासकारों में मुहम्मद हबीब, इरफान हबीब, सतीश चन्द्र एवं अजहर अली प्रमुख हैं। सर्वप्रथम मुहम्मद हबीब ने हमूद ऑफ गजनवी ग्रंथ में महमूद गजनवी के आक्रमणों में आर्थिक उद्देश्यों पर बल दिया। मुस्लिम शासकों द्वारा वसूले जाने वाले जजिया कर को इन्होंने आर्थिक एवं राजनीतिक कर माना, क्योंकि के.ए. निजामी के अनुसार गहड़वाल नरेश गोविन्द चन्द्र ने तुरुष्क दण्ड नामक कर वसूला जो जजिया की ही तरह था।

परंपरावादी इतिहासकार जदुनाथ सरकार ने औरंगजेब की दक्षिण, राजपूत और धार्मिक नीतियों की आलोचना की उसकी इन नीतियों को उन्होंने मुगलसाम्राज्य के पतन का कारण माना। प्रो. अजहर अली ने दी मुगल नोबिलिटी अंडर औरंगजेब में औरंगजेब के शासनकाल पर पुनः लेखन किया तथा अपने शोधपूर्ण ग्रंथ में सांख्यिकी आंकडों के आधार पर परंपरावादी इतिहासलेखन के मत को पूर्णतया बदल दिया। उन्होंने सिद्ध किया, कि अमीर वर्ग संगठन का अध्ययन करने पर औरंगजेब किसी भी दशा में राजड़ोंपूत विरोधी प्रतीत नहीं होता।

इतिहास लेखन की पुनर्रचना एवं इतिहासकारों की आचार संहिता

इतिहास को वस्तुनिष्ठ विषयाधारित नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि इतिहासकार इतिहास में तथ्यों की व्याख्या के लिए स्वतंत्र होता है, वह मानव चेतना एवं बदलाव के कारण कई तरह की गलतियों से सोद्देश्य ऐसे कार्य करता है, जो वर्तमान समाज के लिए स्वीकार करना कठिन है।

ई.एच. कार ने अपने ग्रंथ वाट् इज् हिस्ट्री में इसको स्पष्ट करते हुए लिखा है कि इतिहासकार को एक न्यायाधीश की तरह समाज से ऊपर उठकर पूर्वाग्रह से मुक्त होकर इतिहासलेखन का कार्य करना चाहिए। इतिहास की विद्यालीय स्तर की पाठ्यपुस्तकों की सामग्री को एक बन्दूक, हथियार एवं चुनौतीपूर्ण कार्य न मानकर एक नैतिक कर्तव्य माने जैसा कि विद्वान इतिहासकार नेबूर ने कहा था - इतिहासकार को उस मधुमक्खी की तरह का स्वभाव अपनाना चाहिए जो जहरीले पुष्पों से मीठा शहद इकट्ठा करती हैं।

वर्तमान समाज की आवश्यकता है कि राष्ट्रीय गौरव एवं नैतिक विकास के लिए तथ्यात्मक इतिहास लेखन हो, साथ ही नवीन इतिहास पद्धतियों सबाल्टर्न, एनाल्स स्कूल, संरचनात्मक एवं उत्तर संरचनात्मक तथा उत्तर-आधुनिकता जैसी विचारधाराओं का प्रयोग कर इतिहास लेखन करना चाहिए इससे इतिहास के क्षेत्र एवं आयाम को व्यापकता मिलेगी। समाज की समस्याओं एवं आवश्यकताओं को देखते हुए नवीन स्त्रोंतों के प्रयोग करते हुए इतिहासकार को समाज का मार्गदर्शन करना चाहिए, जिससे इतिहास की प्रासंगिकता बनी रहे।